तपस्विनी दादी प्रकाशमणि जी के नेतृत्व में संस्था का दिव्य सफर

गुजरात के समकालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जी दादी प्रकाशमणि जी से आशीर्वाद लेते हुए।

पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

यू.पी.ए. की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी जी का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

प्रसिद्ध समाजसेवी मदर टेरेसा जी के साथ दादी प्रकाशमणि जी।

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू जी को ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

1922: दादी प्रकाशमणि का जन्म हैदराबाद सिंध (पाकिस्तान) में हुआ। पिताजी हैदराबाद के सुप्रसिद्ध व्यापारी एवं ज्योतिषी थे।

1937: ब्रह्माकुमारी संस्था की स्थापना का समय। इस समय दादी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित किया।

1937-50: त्याग-तपस्या व आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाया। स्वयं सर्वशक्तिवान परमात्मा के सान्निध्य में राजयोग की गहन साधना कर आत्मिक बल अर्जित किया। साथ ही संस्था के बोर्डिंग स्कूल में बच्चों को पढ़ाने की सेवा की।

1950: संस्था का स्थानान्तरण कराची से आबू पर्वत (राजस्थान) में हुआ।

1954: ब्रह्माकुमारी संस्था का प्रतिनिधि मंडल दादी जी के नेतृत्व में 'द्वितीय विश्व धर्मसभा' में भाग लेने जापान गया। छः मास के इस प्रवास के दौरान हांगकांग, सिंगापुर, इंडोनेशिया इत्यादि देशों में जाकर वहाँ के लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग मेडीटेशन का प्रशिक्षण दिया।

1956: भारत के विभिन्न राज्यों में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार किया तथा दिल्ली, पटना, कोलकाता और मुम्बई में नये सेवाकेंद्र खोले।

1956-61: मुम्बई के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों की निदेशिका बनीं। लगभग 100 से भी अधिक कॉन्फ्रेंसेस, आध्यात्मिक प्रदर्शनियां व मेले आयोजित किए।

1964: महाराष्ट्र जोन की निदेशिका बन ईश्वरीय सेवाओं में वृद्धि की।

1965-68: महाराष्ट्र, गुजरात एवं कर्नाटक ज़ोन की निदेशिका के रूप में सेवाएं दीं।

1969: संस्था की मुख्य प्रशासिका नियुक्त हुई। दीदी मनमोहिनी के साथ मिलकर मुख्य प्रशासिका के रूप में संस्था का नेतृत्व किया।

1969-84: भारत के विभिन्न राज्यों में 50 से अधिक कॉन्फ्रेंसेस का आयोजन दादी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

1972: संस्था की सेवाओं का विदेशों में विस्तार हुआ। दादी जी छः सदस्यों के प्रतिनिधि मंडल के साथ विदेश सेवा पर गई और विभिन्न देशों में सेवाकेंद्रों की स्थापना की।

1973: दिल्ली के रामलीला मैदान में भव्य विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने मेले का अवलोकन किया और इससे लाभ उठाया।

1976: 'डिवीनाइज द मैन' कॉन्फ्रेंस का आयोजन मुम्बई में किया गया।

1977: विश्व के पांचों महाद्वीपों में 'पवित्रता के द्वारा विश्व शांति की आशा' कार्यक्रम द्वारा विश्व के राजनीतिज्ञों, धर्म नेताओं तथा अनेक संस्था के प्रमुखों को परमात्म संदेश प्रदान किया गया।

1978: 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन फ्यूचर मेनकाइंड' का आयोजन दिल्ली में हुआ जिसका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती ने किया।

1980: 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन ह्यूमन सरवाइवल' का आयोजन बैंगलोर विधानसभा के बेन्केट हॉल में किया गया।

1981: संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ में गैर सरकारी संस्था के रूप में शामिल किया गया। इसी वर्ष 'द ओरिजन ऑफ पीस' कॉन्फ्रेंस का आयोजन नैरोबी में किया गया।

1982: संस्था की भंगिनी संस्था के रूप में 'राजयोगा एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन' की स्थापना की गई।

1983: प्रथम 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन धर्मगुरू दलाई लामा ने किया।

1984: अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप सहित 13 देशों में दादी जी ने दौरा किया और अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंसेस को सम्बोधित किया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पीस मेडल से संस्था को सम्मानित किया गया। द्वितीय 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' उद्घाटन गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल आर.के. त्रिवेदी ने किया।

1985: तृतीय 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल ओ.पी. मेहरा ने किया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस वर्ष को 'ईयर ऑफ यूथ' घोषित करने पर संस्था द्वारा 'भारत यूनिटी यूथ फेस्टिवल तथा युवा पदयात्रा' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह द्वारा किया गया।

1986: संस्था का गोल्डन जुबली वर्ष मनाया गया। चौथे 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन किया गया। 88 देशों में 'मिलियन मिनट्स ऑफ पीस' कार्यक्रम की लॉचिंग की गई।

1987: संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 'पीस मैसेंजर अवार्ड' प्रदान किया गया। संयुक्त राष्ट्र के सेक्रेटरी जनरल ने दादी जी को अवार्ड भेंट किया। प्रथम 'इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया।

1988: 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' नामक 2 साल के अन्तर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट की लॉचिंग की गई जिसके अन्तर्गत 122 देशों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'ऑल इंडिया स्प्रिच्युल कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन बद्रिकाश्रम के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी शांतानंद सरस्वती ने किया।

1989: अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सी. राय ने किया। 'ऑल इंडिया मोरल अवेकनिंग यूथ केम्पेन' का आयोजन दिल्ली में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा ने किया।

1990: द्वितीय 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' नामक अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा किया गया। तृतीय 'इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस' का आयोजन बेलगाम में किया गया। 'ऑल इंडिया एन्वायरमेंट अवेयरनेस केम्पेन' का आयोजन किया गया।

1991: लंदन में संस्था के ग्लोबल कॉर्पोरेशन हाउस तथा आबू पर्वत में ग्लोबल हॉस्पिटल का उद्घाटन किया गया। दादी जी यूरोप व दक्षिण-पूर्व एशिया के दौरे पर गईं जहाँ उन्होंने अनेक कार्यक्रमों को सम्बोधित किया।

1992: दादी जी रशिया के दौरे पर गई। दादी जी को मुम्बई के प्रियदर्शनी एकेडमी द्वारा प्रियदर्शनी अवार्ड से सम्मानित किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि., उदयपुर द्वारा दादी जी को डाक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया। येल्लापुर में हाईस्कूल की टीचर्स के लिए टीचर ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन किया गया।

1993: 'इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन यूनिवर्सल हार्मनी' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिन्ह राव ने किया। युवा सद्भावना सायकल यात्रा का आयोजन भारत के 8 स्थानों से किया गया।

1994: स्वास्थ्य मेलों का आयोजन पूरे भारत में किया गया।

1996: इंडो-नेपाल हेल्थ अवेयरनेस केम्पेन का आयोजन किया गया।

1999: दिल्ली से जमशेदपुर व दिल्ली से हैदराबाद तक नशामुक्ति अभियान निकाले गए।

1999-2000: भारत के 24 मुख्य शहरों से 24 ज्योतिर्लिंगम रथयात्राएं निकाली गईं। सभी रथयात्राओं का अंतिम पड़ाव आबू पर्वत था। इसका भव्य समापन आबू पर्वत में किया गया।

2000: 'इंटरनेशनल ईयर फॉर द कल्चर ऑफ पीस - मेनिफेस्टो 2000' कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरे भारत से 3 करोड़ लोगों से फार्म भरवाए गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने भी अपने फार्म भरकर इस अभियान में योगदान दिया।

2001-03: पूरे भारत में विश्व बंधुत्व व सद्भावना की भावना को लेकर मेगा प्रोग्राम आयोजित किए गए।

2004: युवा एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से संस्था के युवा प्रभाग ने भारत की सात राजधानियों में युवा महोत्सव आयोजित किए।

2005-06: 'लीविंग स्प्रिच्युअलिटी फॉर ए वैल्यू बेस्ड सोसायटी' अभियान के अन्तर्गत पूरे भारत में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

2006-07: 'शांति एवं शुभभावना' अभियान चलाया गया। 'वर्ल्ड पीस फेस्टिवल' का आयोजन दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 27 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2006 तक किया गया।

2007-08: 'दिव्यता, आशा एवं खुशी' कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के हर शहर में कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत के जगद्गुरु, महामण्डलेश्वरों तथा संतजनों के लिए 'आध्यात्मिक कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। पर्यावरण संकट पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल जी को आशीर्वाद देते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

दादी प्रकाशमणि जी को डॉक्टरेट की डिग्री प्रदान करते हुए राजस्थान के राज्यपाल डॉ. एम. चन्नारेड्डी।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी के साथ दादी प्रकाशमणि जी।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ ईश्वरीय ज्ञान चर्चा करते हुए दादी प्रकाशमणि जी।

सिरोही के राजा एम.एम. रघुवीर सिंह जी के साथ दादी प्रकाशमणि जी।